ध्यान मुकुट

भक्ति योग नहीं है, बल्कि रोग है।

कर्म भी योग नहीं है, बल्कि धर्म है।

ज्ञान ही योग है, ज्ञान योग है।

ध्यान ही योग है, राज योग है।

मुकुट राजतत्त्व और वैभव का चिह्न है।

रत्न जटित मुकुट राजा लोग धारण करते हैं।

लेकिन परम योगी ध्यान मुकुट को धारण करते हैं। श्री बाला जी एक अद्‌भुत योगीश्वर हैं और उन्होंने अत्यधिक योगसाधना द्वारा ध्यान मुकुट धारण किया। भौतिक जगत के राजा और ध्यान-सम्राट में कितना अन्तर है। राजा के अपने मन में ही शांति नहीं होती, फिर वह कैसे दूसरों को शांति दे सकता है। अपार धनराशि होते हुए भी वे संतुष्ट नहीं होते मगर ध्यान सम्राट के लिए आदि, मध्य और अन्त सबमें शांति ही है, इसलिए वे अपने आसपास के लोगों को शांति बाँट सकते ह।

प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान मुकुट धारण करना चाहिए।

श्रीबालाजी की तरह सबका योगीश्वर बनना चाहिए।

उनकी यही इच्छा है।

मेरी इच्छा है कि तिरुमला की भक्ति राजयोग साधना के रूप में परिवर्तित हो जाए।